गीता का उपहार

गीता ने अपनी लकड़ी की गुड़िया के चिकने चेहरे को छुआ. वो एक विशेष गुड़िया थी. एक गुड़िया के अंदर दूसरी फिर तीसरी - इस तरह से उसमें सात गुड़िये थीं. नानी उस गुड़िया को भारत से लाई थीं. यह नानी की पहली यात्रा थी. गीता, मम्मी और पापा तीन साल पहले इस नए देश में आए थे.

गीता ने अपनी गुड़िया को वापस एक-साथ जोड़ा और फिर पतझड़ के चमकते हुए रंगों को देखकर मुस्कुराई. "देखो नानी, यहां के पेड़ भी आपकी यात्रा का जश्न मना रहे हैं. क्या आप खुश नहीं हैं कि आप यहाँ आईं? क्या आपको यह जगह पसंद नहीं है?"

नानी ने हँसते हुए कहा. "मुझे यह जगह बहुत पसंद आई, और तुमने मुझे यहाँ पूरी तरह व्यस्त रखा."

उन दोनों ने मिलकर गीता की बनाई योजना पर अमल किया. वो सुबह-सुबह नहर के किनारे घूमने जाते, वे गीता की सबसे प्रिय दोस्त एमी के परिवार के साथ कैम्पिंग पर गए, जहाँ नानी ने शानदार आम की आइसक्रीम बनाई.

मम्मी ने अपनी किताब नीचे रखते हुए कहा. "और उसने आपको स्केटिंग कराने का पक्का इरादा बनाया है."

गीता ने अपनी बांहें नानी के गले में डाल दीं. "आइस-स्केटिंग बहुत मज़ेदार होती है, आपको उसमें बड़ा मज़ा आएगा ..."

"अरे नहीं," नानी हँसीं. "क्या यह पर्याप्त नहीं है कि मैं कैम्पिंग के लिए गई? मैं डरते-डरते उस डोंगी में बैठी, मुझे लगा कि तुम मुझे डुबाने की कोशिश कर रही थीं ...?"

मम्मी और गीता ज़ोरों से हँसते हुए बाहर निकलीं.

"पापा, क्या आपको हमारे कैम्पिंग ट्रिप की फोटो मिलीं? वो जिसमें नानी डोंगी में बैठीं थीं?"

पापा खिड़की के पास खड़े थे. वो एक पत्र पढ़ रहे थे.

"पापा," गीता ने उनकी आस्तीन खींचते हुए कहा. "फोटो."

पापा ने देखा. "माफ़ करना गीता, मैं उन्हें लाना भूल गया."

मम्मी को पापा पर गुस्सा आया. "आपको क्या हो गया है? आप उसी पत्र को बार-बार पढ़ रहे हैं. आपने हमारा कहा एक शब्द भी नहीं सुना."

गीता ने पापा को करीब से देखा. उन्हें क्या हो गया था?

पापा ने उस चिट्ठी को मोड़ा और फिर वो बैठ गए. "असल में मुझे आप लोगों को एक खबर बतानी है."

"मुझे पता था," गीता ने कहा.

पापा ने नानी की तरफ देखा, फिर अपना गला साफ किया. "मुझे एक नौकरी का ऑफर मिला है. मैं उस नई शाखा का हेड बनूँगा," उन्होंने मम्मी और गीता की ओर रुख किया. "लेकिन हमें इस शहर को छोड़ना होगा.”

"तबादला, कहाँ?" मम्मी ने तेज आवाज में पूछा.

"हमें भारत वापस जाना होगा," पापा ने चुपचाप कहा.

भारत वापस? नानी के पास वापस? - गीता का दिल खुशी से उछलने लगा.

फिर धीरे-धीरे उसे पूरी बात समझ आई.

यहाँ छोड़ कर? एमी को छोड़ कर, इस घर और दोस्तों को छोड़ कर?

ऐसा लगा जैसे उसने दूर से नानी को यह कहते सुना हो, "मैं बहुत खुश हूं...." फिर रुकी.

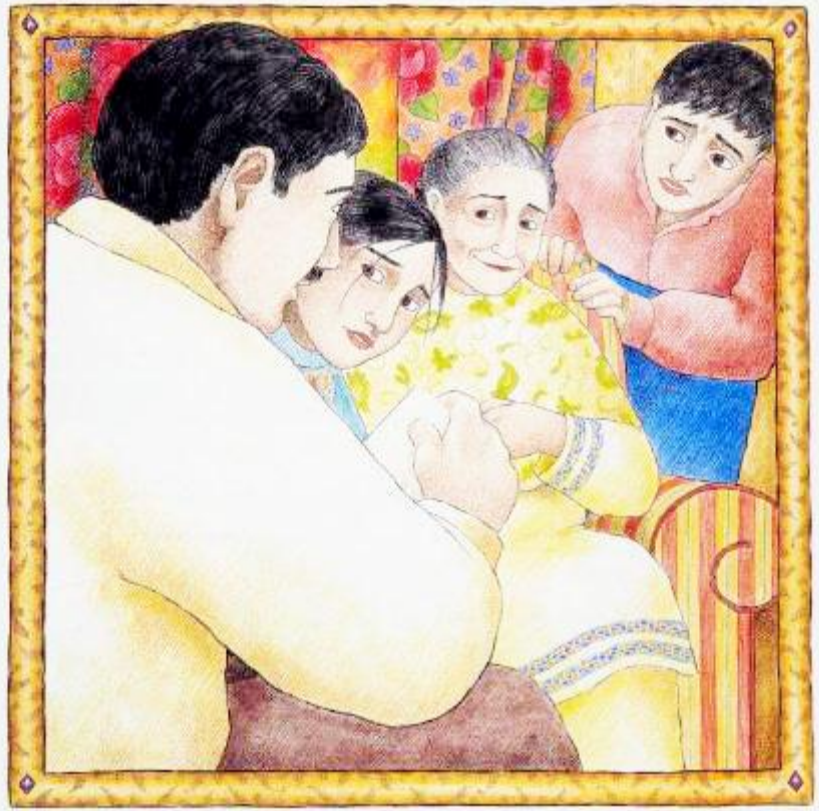

फिर एक लंबा सन्नाटा छाया रहा.

"क्या तुम वो ऑफर स्वीकार करोगे?" नानीजी ने मुस्कुराते हुए पूछा.

गीता ने मम्मी के पीले चेहरे की ओर देखा. पापा की आँखें नीचे झुकीं थीं.

पापा ने धीरे से कहा. "यह कुछ ऐसा मामला है जिसे हम सभी मिलकर तय करेंगे. हम तीन साल से यहां हैं, और अब हमारी जड़ें यहां जमने लगीं हैं."

गीता ने नानी के चेहरे पर एक नजर डाली. वो अभी भी मुस्कुरा रही थीं - बिलकुल उसी तरह से जब हम लोग भारत छोड़ रहे थे.

उसके बाद गीता अपने पसंदीदा मेपल के पेड़ के नीचे छिपने से स्थान पर भाग गई.

जब वो पहली बार यहां आई थी, तो उसे भारत में अपने घर की बहुत याद आती थी. रात में, वही उसके दिमाग में घूमता रहता था - घर का हर कोना, हर विवरण उसे याद आता था. लेकिन अब वो यादें फीकी पड़ चुकी थीं.

उसने भारत के बारे में कब सोचना बंद किया था? जब वह और एमी दोस्त बने? जब उसने पहली बार बर्फ जमे कैनाल पर स्केटिंग की? फिर गीता ने अपनी गुड़िया खोली, और उसमें से एक के बाद एक करके सभी गुड़िये निकालीं. अंत में वो सबसे अंदर वाली गुड़िया पर पहुंची. उसे तमाम क्षण याद आने लगे, उसका अलग-अलग बेसबॉल टीमों में भाग लेना, पहाड़ों पर कैम्पिंग करना, पहला पिज्जा, और पडोसी मिस्टर फ्लिंच के साथ गुलाब के पौधे लगाना ...

भारत अब उसके ज़हन में सुदूर रंगों और आवाज़ों का एक गूँज भर था. अब नया देश ही उसका घर था.

धीरे-धीरे गीता ने गुड़ियों को एक-साथ वापस रखा. वे कितनी खूबसूरती से फिट हुईं. ठीक उसी तरह जैसे उसके जीवन के तमाम हिस्से अब यहाँ फिट हो चुके थे. हां, नानी के बिना भी, उसका घर यहीं था. उसका दिल कुछ खराब हुआ.

लेकिन अगर मम्मी और पापा ने नौकरी लेने का फैसला किया तो फिर क्या होगा? उसके भीतर डर का एक बुलबुला पनप रहा था. अगर उन्हें लगा कि वो भी उनके साथ जाना चाहेगी तो क्या होगा?

गीता अंदर भागकर गई. मम्मी, पापा और नानी की आवाज़ें सूखे पत्तों की तरह उसके चारों ओर घूम रही थीं.

गीता ने पापा के कुछ शब्द पकड़े: अच्छी नौकरी, घर, परिवार. ऐसा लगा जैसे वे पुरानी छोड़ने की योजना बना रहे थे!

"मम्मी, पापा. मैं नहीं जा सकती हूँ, मैं नहीं जाऊंगी. मेरा घर यहाँ पर है, हम यहीं रहेंगे ..."

मम्मी ने गीता को अपने गले लगाया.

"सब ठीक है, गीता," पापा ने धीरे से कहा. "हम नहीं जा रहे हैं."

"हम नहीं जायेंगे?" गीता एक गहरी साँस ली. "हम यहीं रहेंगे!"

फिर उसने नानी का चेहरा देखा.

"नानी, मैं आपके साथ रहना चाहती हूं, लेकिन ..." उसने गुड़िया को अपने दिल के करीब कसकर पकड़ा. "सब कुछ यहाँ है. सब कुछ, आपको छोड़कर."

मम्मी मुस्कुरा दीं. "मुझे अभी भी भारत, अपने परिवार की बहुत याद आती है. वहां के रंग, चमेली की खुशबू, सावन-भादों के बादलों भी याद आते हैं. लेकिन हमने यहां आने का निर्णय लिया, और अब मुझे यहाँ भी बहुत पसंद है."

पापा ने सिर हिलाया. "हम अब यहाँ के हैं."

"हमारे साथ रहो नानी," गीता ने फुसफुसाया. "कृपा करके?"

"हमने नानी से उसके बारे में पूछा," पापा ने उदास होकर कहा.

नानी ने गीता के बालों को सहलाया. "मेरा घर भारत में है," उन्होंने धीरे से कहा. "मुझे वहीं अच्छा लगता है, बिलकुल उसी तरह जैसे आपको यहां से प्यार है. भारत वो जगह है जहां मेरे जीवन के तमाम अनुभव और मेरी सारी यादें मौजूद हैं - आप लोगों को छोड़कर बाकी सबकुछ."

"आप यहाँ पर नई यादें बना सकती हैं."

"वो मेरे पास पहले से ही हैं. मैं यहाँ की यादें वापस ले जाकर उन्हें भी संजोकर रखूंगी."

गीता ने मुस्कुराने की कोशिश की. अलविदा कहते समय नानी हमेशा मुस्कुराती थीं, वो कभी रोती नहीं थीं.

"याद रखना, मेरा एक हिस्सा हमेशा तुम्हारे साथ ही रहेगा," नानी ने कहा.

गीता ने सिर हिलाया. हाँ, नानी अभी तो उसके पास थीं. नानी ने गुलाबों की छंटाई में मदद की, नानी ने हंसते हुए, बेसबॉल का बल्ला घुमाते हुए कहा कि उन्हें क्रिकेट ज़्यादा पसंद थी, नानी ने गीता और एमी को शानदार साड़ियां पहनाईं. नानी ने तारों के नीचे बच्चों को कहानियाँ सुनाईं.

गीता का एक भाग हमेशा नानी के साथ रहेगा.

गीता ने अपनी गुड़ियों को एक के बाद एक करके खोला और अंत में वो केंद्र वाली गुड़िया पर पहुंची. रोती हुई आँखों से उसने सबसे छोटी गुड़िया नानीजी के हाथ में थमाई.

बाहर हवा का एक झोंका उसके पेड़ की शाखाओं को हिलाया. धूप में हंसते हुए गीता ने कहा. "देखो, मेरे पेड़ अभी भी आपकी यात्रा का जश्न मना रहे हैं."

नानी ने गीता के गाल को छुआ और कहा, "और तुम्हारा घर."

धीरे-धीरे गीता मुस्कुराई. "मेरा घर," वो फुसफुसाई.

समाप्त